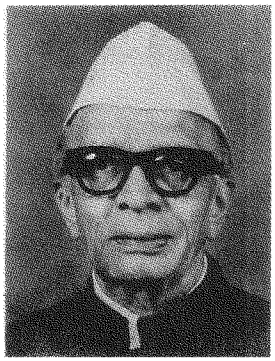

## रामचंद्र नारायण दाण्डेकर
## Ramchandra Narayan Dandekar

रामचंद्र नारायण दाण्डेकर, जिन्हें साहित्य अकादेमी आज अपने सर्वोच्च सम्मान **महत्तर सदस्यता** से विभूषित कर रही है, देश के सर्वाधिक प्रतिष्ठित संस्कृत विद्वानों में से एक हैं । अपने योगदान से आपने न केवल संस्कृत अध्ययन को बढ़ावा दिया है, बल्कि प्राच्य अध्ययन और विशेष रूप से वैदिक अध्येता होने के नाते भारत विद्या को भी समृद्ध किया है ।

अपने शोध-कार्य की विविधता और व्यापकता के साथ आर.एन. दाण्डेकर का विश्व के भारतविदों और संस्कृत विद्वानों में विशेष स्थान है । आपके *वेदिक बिब्लिओग्राफ़ी* ग्रंथों और वैदिक मिथकशास्त्र, महाकाव्य, प्राचीन भारतीय इतिहास और धर्म तथा दर्शनशास्त्र जैसे विविध विषयों पर लिखी पुस्तकों एवं आलेखों ने आपको अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई । विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों की कक्षाओं एवं विद्वत् सभाओं में आपके प्रेरणाप्रद व्याख्यानों ने अपनी दृढ़ एवं सुंदर प्रस्तुति तथा विषयवस्तु के सहज प्रतिपादन से छात्रों और श्रोताओं पर अपना स्थायी प्रभाव छोड़ा है और हमेशा उन्हें मौलिक चिन्तन की ओर प्रेरित किया ।

आर.एन. दाण्डेकर का जन्म 17 मार्च 1909 को सतारा, महाराष्ट्र में हुआ । आपकी शिक्षा डेकन कॉलेज, पुणे और हाइडेलबेर्ग विश्वविद्यालय, जर्मनी में हुई । बंबई विश्वविद्यालय से 1931 और 1933 में आपने क्रमशः संस्कृत और प्राचीन इतिहास में स्नातकोत्तर उपाधियाँ प्राप्त कीं और दोनों में आप प्रथम स्थान पर रहे । हाइडेलबेर्ग विश्वविद्यालय से 1938 में आपने पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की । इस दौरान आपको कई पुरस्कार और छात्रवृत्तियाँ प्राप्त हुईं । आपको डॉयच अकादेमी से फ्रीडरिख़ रुकर्ट वृत्ति (1936-37) और अलेक्जेंडर फ़ॉन हुम्बोल्ट वृत्ति (1937-38) प्राप्त हुई । आप फ़र्ग्यूसन कॉलेज, पुणे में संस्कृत और प्राचीन भारतीय संस्कृति के प्रोफ़ेसर (1932-50); डेकन एजूकेशन सोसाइटी, पुणे के आजीवन सदस्य और सचिव; संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, पूना विश्वविद्यालय में प्रोफ़ेसर एवं अध्यक्ष (1950-69); कला संकाय, पूना विश्वविद्यालय के डीन फ़ैकल्टी ऑफ़ आर्ट्स

Ramchandra Narayan Dandekar on whom the Sahitya Akademi is conferring its highest honour of Fellowship today is one of the most outstanding Sanskrit scholars of the country, whose contribution is so substantial that it has not only enriched Sanskrit studies, but also Oriental studies in general, and Indology in particular, his specialty being Vedic Studies.

R.N.Dandekar occupies a prominent place among the Indologists and Sanskritists of the world for the impressively wide range of his researches. The volumes of his *Vedic Bibliography* and his other books and articles on such a variety of subjects as Vedic Mythology, Ancient Indian History, and Religion and Philosophy have won for him international reputation. His inspiring lectures at the University and in college classes and semi-public meetings have, on account of his firm and beautiful delivery and lucid exposition of the themes, left a permanent impress upon the students and other audiences and have always provoked some kind of original thinking among them.

Born on 17 March 1909 in Satara, Maharashtra, R.N.Dandekar was educated in Deccan College, Pune and Heidelberg University, Germany. He secured the first rank in the two Master's degrees he obtained in Sanskrit and in Ancient Indian Culture from Bombay University in 1931 and 1933 respectively. He took Ph.D. from Heidelberg University in 1938. He won several prizes and scholarships during this period; he was the Friedrich Ruckert Stipendiary in the Deutsche Akademie (1936-37) and Alexander von Humboldt Stipdendiary (1937-38). He was Professor of Sanskrit and Ancient Indian Culture, Fergusson College, Pune, (1932-50); Life Member and Secretary of the Deccan Education Society, Pune;

(1959-65) और 1961 में कुछ समय के लिए पूना विश्वविद्यालय के कुलपति रहे । आप सेंटर ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज़ इन संस्कृत, पूना विश्वविद्यालय के निदेशक (1964-74) रहे ।

आर. एन. दाण्डेकर ने 10वीं भारतीय इतिहास कांग्रेस के प्राचीन काल खंड, 14वीं अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस के वैदिक खंड और अंतरराष्ट्रीय ओरियंटल कांग्रेस के भारत-विद्या खंडों के कई सत्रों की अध्यक्षता की । आप 1989 में विशाखापटनम में आयोजित 34वीं अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस और 1996 में पुणे में आयोजित बृहन् महाराष्ट्र ओरियंटल कांफ्रेंस के अध्यक्ष रहे ।

आर. एन. दाण्डेकर विभिन्न सम्मानों एवं पुरस्कारों से विभूषित हैं । आपको 1962 में पद्मभूषण से; 1979 में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा वाचस्पति (डी.लिट.) की उपाधि से; बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, पूना विश्वविद्यालय, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ और डेकन कॉलेज डीम्ड यूनीवर्सिटी द्वारा "डॉक्टर ऑफ़ लेटर्स" की मानद उपाधि से विभूषित किया गया । हाइडेलबेर्ग विश्वविद्यालय ने आपको मानद "डॉक्टर ऑफ़ फ़िलासफ़ी" प्रदान की थी ।

आपको अनेक मानद सदस्यताएँ और शैक्षिक सम्मान प्रदान किए गए । आप एकोल फ्रांसेस देक्सत्रीम ओरियंट, पेरिस के मानद सदस्य; कौंसिल ऑफ़ इंटरनैशनल यूनिवर्सिटी फ़ाउंडेशन, वाशिंगटन के चार्टर सदस्य; दी एकेडेमी ऑफ़ ह्यमन राइट्स के सलाहकार सदस्य; सोसिएत आसियातीक, पेरिस के मानद सदस्य रहे । आपको इस्तित्यूतो पेर इल मेदिओ एद एस्त्रीम ओरियंते, रोम का सर्वोच्च मेरिट डिप्लोमा प्रदान किया गया था ।

संस्कृत कार्यालय अयोध्या द्वारा "विद्याभूषण", काशी स्वाध्याय मण्डल द्वारा "प्राच्यविद्यालंकार", अखिल भारतीय पंडित महापरिषद् वाराणसी द्वारा "महामहोपाध्याय" और मणिपुर साहित्य परिषद्, इम्फाल द्वारा "गवेषणारत्न" की उपाधि से आपको अलंकृत किया जा चुका है ।

आपने कई महत्त्वपूर्ण पदों पर कार्य किया है : आप भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे (1939-1993) के मानद सचिव; अखिल भारतीय ओरियंटल कांफ्रेंस (1943-1985) के महासचिव और संस्कृत आयोग, भारत सरकार (1956-57) के सदस्य-सचिव रह चुके हैं । आप इंटरनैशनल यूनियन ऑफ़ ओरियंटलिस्ट्स के (अब जिसे इंटरनैशनल यूनियन फ़ॉर ओरियंटल रिसर्च स्टडीज़ कहा जाता है) उपाध्यक्ष (1954-1973, अध्यक्ष (1973-1991) और मानद अध्यक्ष (1991) रहे । आप इंटरनैशनल कौंसिल फ़ॉर फ़िलॉसफ़ी एण्ड

Professor of Sanskrit and Head of the Department of Sanskrit and Prakrit Languages, University of Poona, (1950-69) and Dean, Faculty of Arts, University of Poona (1959-65). He held charge as Vice Chancellor, University of Poona for some time in 1961. He was Director, Centre of Advanced Study in Sanskrit, University of Poona (1964-74).

R.N. Dandekar presided over Ancient Period Section, 10th Indian History Congress; Vedic Section, 14th All-India Oriental Conference and Indological Sections at Several Sessions of the International Congress of Orientalists. He was General President of 34th All-India Oriental Conference held at Visakhapatnam in 1989 and Brihan Maharashtra Oriental Conference at Pune in 1996.

R.N. Dandekar is the recipient of several awards and honours. He won the Padma Bhushan in 1962; Vachaspati (D.Litt.) from Sampurnananda Sanskrit Vishva Vidyalaya, Varanasi in 1979; Honorary Doctor of Letters degree from Banaras Hindu University, University of Poona, University of North Bengal, Tilak Maharashtra Vidyapeetha, and Deccan College Deemed University. He was awarded the Doctor of Philosophy degree, as honorary re-conferment, by Heidelberg University.

He has received several Honorary Memberships and Academic Honours like Honorary Member, Ecole Francaises d'Extreme Orient, Paris; Charter Member of the Council of International University Foundation, Washington; Advising Member, The Academy of Human Rights; Honorary Member, Societe Asiatique, Paris; Highest Merit Diploma, Istituto per il Medio ed Estremo Oriente(IsMEO) Rome, and so on.

Many titles like "Vidyabhushana" from Sanskrit Karyalaya, Ayodhya, "Pracyavidyalamkara" from Kasi Svadhyaya Mandala, "Mahamahopadhyaya" from Akhila Bharatiya Pandit Mahaparishad, Varanasi and "Gaveshanaratna" from Manipuri Sahitya Parishad, Imphal, have been conferred on him.

He has held several distinguished offices like Honorary Secretary, Bhandarkar Orinental Research Institute, Pune (1939-1993), General Secretary, All-India Oriental Conference (1943-85) and Member-Secretary, Sanskrit Commission, Government of India (1956-57). He has held the offices of Vice-President (1954-1973), President (1973-1991) and Hon. President (1991) of the International Union of Orientalists (now, International Union for Oriental

ह्यूमनिस्तिक स्टडीज़ (सी आई पी एस एच), यूनेस्को के उपाध्यक्ष (1955-61) और इंटरनैशनल एसोसिएशन ऑफ़ संस्कृत स्टडीज़ के अध्यक्ष (1973-1994) भी रह चुके हैं ।

आप सरकार और अन्य शैक्षिक संस्थाओं में भी कई उच्च पदों पर रहे: जैसे, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के केन्द्रीय संस्कृत बोर्ड, इंडोलॉजी कमिटी, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान और पुरातत्त्व विभाग के केन्द्रीय बोर्ड के सदस्य के रूप में काम किया ।

निम्नलिखित पत्रिकाओं के आप या तो संपादक रहे या संपादक मण्डल में रहे : एनल्स ऑफ़ द भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, इण्डो-इरानियन जर्नल, एनुअल बिब्लिओग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन हिस्ट्री एण्ड आर्कियोलॉजी (लाइडेन), संस्कृत-विमर्श, इस्लामिक कल्चर्स, इरास्मुस (डर्मस्टाड), इंडियन एंटीक्वैरी, जर्नल ऑफ़ दी यूनीवर्सिटी ऑफ़ पूना (मानविकी विभाग), सी.ए.एस.एस. स्टडीज़, पूना विश्वविद्यालय।

आपने कई प्रमुख अतंरराष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया है, जैसे अंतरराष्ट्रीय ओरियंटलिस्ट्स कांग्रेस, जो अब इंटरनैशनल कांग्रेस ऑफ़ एशियन एण्ड नॉर्थ अफ्रीकन स्टडीज़ के नाम से जानी जाती है, 11 सत्रों में; इंटरनैशनल कांग्रेस फ़ॉर द हिस्ट्री ऑफ़ रिलीजन के 3 सत्रों में; विश्व संस्कृत सम्मेलन के 8 सत्रों में; इंटरनैशनल कांग्रेस फ़ॉर माडर्न लैंग्वेजेज़ एण्ड लिटरेचर के एक सत्र में; इंटरनैशनल कांफ्रेंस ऑन पुराणाज़ के एक सत्र में और अंतरराष्ट्रीय वैदिक अध्ययन कार्यशाला के एक सत्र में ।

आपके सम्मान में कई अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं : *प्रो. आर. एन. दाण्डेकर फ़ेलिसिटेशन वाल्यूम : इंडियन एंटीक्वेरी,* थर्ड सीरीज़, विशेष अंक, बंबई 17.3.1969— *ग्लिम्पसेज़ ऑफ़ वेद एंड व्याकरण* के रूप में पुनर्मुद्रित; *अमृतधारा : प्रो. आर. एन. दाण्डेकर फ़ेलिसिटेशन वाल्यूम,* दिल्ली 17.3.84 ।

आपकी कुछ प्रमुख कृतियाँ हैं : *क्रिटिकल एडीशन ऑफ़ महाभारत, वेदिक बिब्लिओग्राफ़ी* (6 खण्ड), *हड़प्पा बिब्लिओग्राफ़ी, सेलेक्टेड राइटिंग्ज़* (वाल्यूम I : *वेदिक माइथोलॉजिकल ट्रैक्ट्स;* वाल्यूम II : *इनसाइट्स इनटु हिन्दुइज़्म;* वाल्यूम III : *एक्सरसाइज़ेज़ इन इंडोलॉजी;* वाल्यूम IV : *दी एज ऑफ़ द गुप्ताज़ एंड अदर एसेज़;* वाल्यूम V : *इंडोलॉजिकल मिसलीनिया; डेर वेदिश मेंश,* (हाइडेलबेर्ग); *ए हिस्ट्री ऑफ़ द गुप्ताज़; सम आस्पेक्ट्स ऑफ़ द हिस्ट्री ऑफ़ द हिन्दुइज़्म; बर्थराइट ऑफ़ मैन;* "हिन्दुइज़्म", *हिस्टोरिया रेलिजिओनम,* वाल्यूम II में संग्रहीत (लाइडेन); *डेर मेंश इम डेंकेन डेस हिन्दुइज़्मस* (वियना); *रीसेंट ट्रेंड्स इन इंडोलॉजी* (यूनेस्को द्वारा प्रायोजित) । आपकी अनेक टीकाएँ भी हैं :

and Asian Studies). He was Vice-President of International Council for Philosophy and Humanistic Studies (CIPSH), UNESCO (1955-1961) and President, International Association of Sanskrit Studies (1979-1994).

He also held many responsible positions in Government and other Academic Organizations, like Central Sanskrit Board, Indology Committee, Rashtriya Sanskrit Sansthan and Central Advisory Board for Archaeology, in the Ministry of Education, Government of India.

He was either Editor, or was on the Editorial Committee of the following journals: *Annals of the Bhandarkar Oriental Research Institute, Indo-Iranian Journal, Annual Bibliography of Indian History and Archaeology* (Leiden), *Samskrita-Vimarsha, Islamic Culture, Erasmus,* (Darmstadt), *Indian Antiquary,* Journal of the University of Poona (Humanities Section), *CASS Studies,* University of Poona.

He has participated in major international conferences like International Congress of Orientalists, now called International Congress of Asian and North African Studies (11 Sessions), International Congress for the History of Religions (3 Sessions), World Sanskrit Conference (8 Sessions), International Congress for Modern Languages and Literatures (1 Session), International Conference on Puranas (1 Session) and International Workshop on Vedic Studies (1 Session).

Felicitation Volumes brought out in his honour are: *Professor R.N.Dandekar Felicitation Volume: Indian Antiquary,* Third Series, Special Number, Bombay: 17.3.1969, reprinted as *Glimpses of Veda and Vyakarana; Amritadhara: Professor R.N. Dandekar Felicitation Volume,* Delhi: 17.3.84.

Some of his major publications are: *Crtitical Edition of the Mahabharata, Vedic Bibliography* (Six Volumes), *Harappan Bibliography, Selected Writings* (Vol. I: *Vedic Mythological Tracts,* Vol. II: *Insights into Hinduism,* Vol. III: *Exercises in Indology,* Vol. IV: *The Age of the Guptas and Other Essays,* Vol. V: *Indological Miscellanea) Der Vedische Mensch,* (Heidelberg), *A History of the Guptas, Some Aspects of the History of Hinduism, Birthright of Man,* "Hinduism" in *Historia Religionum* (Vol. II:) Leiden, *Der Mensch im Denken des Hinduismus,* Vienna, *Recent Trends in Indology* (Sponsored by UNESCO). His critical editions include: *Jnanadipika* of Devabodha, *Rasaratnapradipika* of Allaraja and *Subhashitamuktavali,* and proceedings of conferences,

*ज्ञानदीपिका ऑफ़ देवबोध; रसरत्नप्रदीपिका ऑफ़ अल्लाराजा* और *सुभाषितमुक्तावली* । सम्मेलनों की कार्रवाई, संगोष्ठी में पठित आलेख तथा गोष्ठियों में पढ़े गए अनेक निबंध हैं ।

*वेदिक माइथॉलॉजिकल ट्रैक्ट्स* में दाण्डेकर के वैदिक मिथकशास्त्र से सम्बंधित आलेख हैं । *इनसाइट्स इनटु हिन्दुइज़्म* में इतिहास और हिन्दूवाद की विषयवस्तु से जुड़े आलेख हैं । *एक्सरसाइज़ेज़ इन इंडोलॉजी* में वैदिक इतिहास, वैदिक भाष्य, वैदिक अनुसंधान, वैदिक मनोविज्ञान, महाभारत और प्राचीन भारतीय परंपरा के कुछ पक्षों से जुड़े आलेख शामिल हैं ।

संप्रति आर.एन. दाण्डेकर भंडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, पुणे के उपाध्यक्ष और पूना विश्वविद्यालय में संस्कृत के एमेरिटस प्रोफ़ेसर और भारत सरकार के नैशनल रिसर्च प्रोफ़ेसर हैं । इसके अलावा आप कई भारतीय और विदेशी विश्वविद्यालयों से भी जुड़े हैं और संस्कृत, भारत विद्या और प्राच्य विद्या के क्षेत्र में स्थानीय, क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर आप सम्बद्ध हैं ।

यह एक आम धारणा है कि विद्वत्ता और प्रशासनिक या सांगठनिक क्षमता किसी व्यक्ति में एक साथ सामान्यतः नहीं पाई जाती । यहाँ उल्लेखनीय है कि आर.एन. दाण्डेकर ने स्वयं यह प्रमाणित कर दिखाया है कि वे पूना विश्वविद्यालय और भंडाकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट में एक सफल प्रशासक रहे और ऑल इंडिया ओरियंटल कांफ्रेंस के सत्रों और विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निकायों की बैठकों के सक्षम संयोजक भी रहे । सभी प्रकार की गतिविधियों को विधिवत् संचालित करने में आपको महारत हासिल है; साथ ही आप यह भी ध्यान रखते हैं कि आयोजन का अकादेमिक स्तर बरक़रार रहे। आपके निर्देशन में व्यक्तियों के साथ-साथ संस्थाओं ने भी प्रशिक्षण प्राप्त किया है ।

एक लेखक और विद्वान के रूप में असाधारण प्रतिभा के धनी रामचंद्र नारायण दाण्डेकर को साहित्य अकादेमी अपने सर्वोच्च सम्मान **महत्तर सदस्यता** से विभूषित करती है ।

seminar papers, and essays presented in several symposia.

*Vedic Myhological Tracts* contains papers relating to Vedic Mythology. *Insights into Hindusim*, comprises papers relating to the history and content of Hinduism. *Exercises in Indology* contains papers relating to such diverse topics as Vedic history, Vedic exegesis, Vedic research, Vedic psychology, the *Mahabharata* and some aspects of ancient Indian tradition.

Presently R.N.Dandekar is Vice-President, Bhandarkar Oriental Research Institute, Pune, Emeritus Professor of Sanskrit, University of Poona and National Research Professor, Government of India. Besides, he is associated with many Indian and foreign universities in different capacities and connected with most of the important activities in the field of Sanskrit, Indology and Orientology, at local, regional, national and international levels.

It is a common observation that scholarship and administrative or organizational capacity do not generally go hand in hand. Here again it is remarkable that R.N. Dandekar has proved himself to be a successful administrator at the University of Poona and the Bhandarkar Oriental Research Institute and an efficient organizer at the sessions of the All-India Oriental Conference and at the meetings of various national and international bodies. He commands the knack of keeping every activity moving according to the schedule, at the same time seeing to it that the academic standard of that activity is uniformly maintained. Individuals as well as institutions have gained valuable training by working under his efficient supervision.

For his unquestionable eminence as a writer and scholar, the Sahitya Akademi confers its highest honour, the Fellowship, on Ramchandra Narayan Dandekar.